हास्य / ब्याह पाछै

डॉक्टर रणबीर सिंह दहिया

रमलू -इस दिन का तो मनै बहोत दिन तैं इन्तजार था ।
कमलो - तो मैं जाऊँ ?
रमलू - ना कति नहीं ।
कमलो - के तूँ मेरे तैं बहोत प्यार करै सै ।
रमलू - हाँ । पहलम भी करूँ था, इब्बी करूँ सूँ, अर आगै भी करता रहूंगा ।
कमलो - कदे मेरी गेल्याँ धोखा तो नहीं करैगा ?
रमलू -कति नहीं । इस तैं आच्छा तो यो होगा अक मैं मरे जाऊं ।
कमलो -- हमेशा प्यार करैगा ना ?
रमलू -- हमेशा ।
कमलो - कदे मनै पीटैगा तो नहीं ?
रमलू - ना मैं इसा मानस कोण्या ।
कमलो -- के मैं तेरे पै भरोसा कर सकूँ सूँ ?
रमलू -हाँ
कमलो --ओह डार्लिंग !
ब्याह के पांच साल पाच्छै,
ईब इसनै नीचे तैं ऊपर पढ़ कै देखो।

विपक्ष में रहकर सदन नहीं चलने देती थी भाजपा, अब सत्ता में रहकर भी ठप कर रही संसद की कार्यवाही

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

देश के संसदीय इतिहास में पहली घटना है जब बजट के दूसरे चरण में सत्तापक्ष (मोदी सरकार व भाजपा) ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा लंदन में दिए गए कथित देश विरोधी बयान को लेकर माफी की मांग की आड़ में संसद के दोनों सदनों की संसदीय कार्यवाही को हंगामे की भेंट चढ़ा दिया। वहीं विपक्ष विशेषकर कांग्रेस महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और अडाणी घोटाले पर बहस तथा अडाणी विवाद पर जेपीसी के गठन की मांग पर अड़ा रहा। इस हंगामे में अवसर का लाभ उठाते हुए मोदी सरकार ने बजट व कुछ अन्य महत्वपूर्ण विधेयकों को बिना किसी बहस के कुछ मिनट में ही पारित करा लिया।

दरअसल, मोदी सरकार की रणनीति रही है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मित्र अडाणी समूह के वित्तीय घोटाले को चर्चा का मुद्दा न बनने दिया जाए क्योंकि मोदी सरकार को आशंका रही है कि यदि अडाणी घोटाले पर चर्चा हुई और जेपीसी का गठन हुआ तो अडाणी घोटाला भी एक चुनावी मुद्दा बन जाएगा। जिसका खामियाजा मोदी सरकार व भाजपा को उठाना पड़ेगा। जिस प्रकार तत्कालीन विपक्षी पार्टी भाजपा ने महमोहन सिंह सरकार के शासन काल में तत्कालीन कथित आर्थिक घोटालों को मुद्दा बना कर 2014 में लोकसभा चुनाव जीता था।

राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा अन्य विपक्षी नेता जिस तरह से अडाणी मुद्दे को लेकर संसद में लगातार सवाल खड़े कर रहे थे, उससे मोदी सरकार व भाजपा को लगा कि अगर उन्हें बोलने का मौका दिया गया तो फिर से वह इसी मुद्दे को लेकर सवाल करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा प्रोत्साहित मोदी सरकार व भाजपा ने ऐसा माहौल बनाया कि विपक्ष को बोलने व सवाल न करने दिया जाए और सदन को न चलने दिया जाए। इसलिए सत्तापक्ष ने दोनों सदनों में हंगामा कर विपक्ष द्वारा उठाए गए मुद्दों पर चर्चा नहीं होने दी और राज्यसभा व लोकसभा में विपक्षी नेताओं विशेषकर कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे व कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के बयान के अधिकांश हिस्से को सदन की कार्यवाही से काट दिया गया।

स्मरण रहे कि सदन को चलाने की जिम्मेदारी सत्ता पक्ष की होती है, विपक्ष तो हमेशा सदन में मुद्दे उठाता रहा है। भाजपा जब विपक्ष में थी, तब उसने भी यही किया था। भाजपा के वरिष्ठ नेता अरुण जेटली ने बकायदा सदन में कहा था कि संसद में गतिरोध न सिर्फ लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है, बल्कि यह विपक्ष का अधिकार भी है और सदन चलाने का उत्तरदायित्व सत्ता पक्ष का है। स्पष्टतः मोदी सरकार की रणनीति से संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली को गहरा आघात पहुंचा है।

मुल्ला नसरुद्दीन और मोदी जी

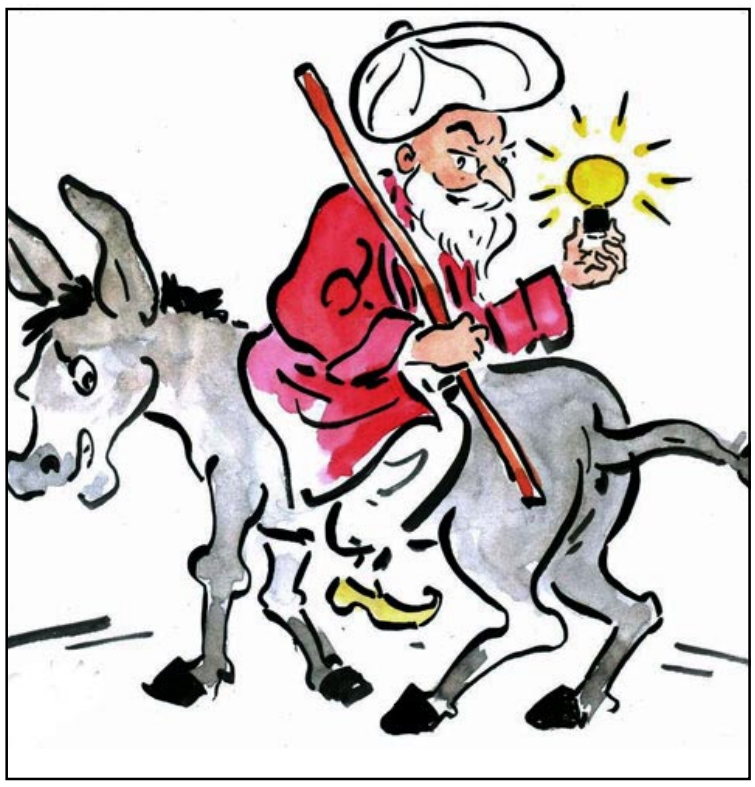

उसका नाम पहले सिर्फ नसरुद्दीन हुआ करता था। कुछ उसे प्यार से नसरू और कुछ मियां नसरुद्दीन कहा करते थे। नसरुद्दीन को लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन बनने से बहुत पहले ही रोज-रोज नये-नये किस्से गढ़ने का बहुत शौक था बल्कि नशा सा था। ताजा राजनीतिक हालात को वह फौरन किस्से में बदल देता था।

मोदी जी उस समय भी थे और प्रधानमंत्री ही थे। भारत के थे या नहीं, यह तो मोदी जी को भी याद नहीं मगर कहीं के थे जरूर, इतना उन्हें याद है।

मोदी जी को लगता था कि यह नसरुद्दीन मेरे खिलाफ रोज किस्से गढ़ता रहता है। तब इंटरनेट, टीवी,फेसबुक वगैरह तो कुछ था नहीं, नसरुद्दीन के किस्सों पर प्रतिबंध लगाने और 'देश की सुरक्षा' के साथ नसरुद्दीन की इस 'छेड़छाड़' को रोकने का उपाय भी नहीं किया जा सकता था। नसरुद्दीन एक जगह एक किस्सा सुनाता और वो कानोंकान एक से दूसरे तक पहुंचता चला जाता और लोग आनंद लेते, हसते-हंसते लोटपोट हो जाते। दूसरे भी देखा-देखी उतने ही बढ़िया किस्से गढ़ने लगे और वे किस्से भी नसरुद्दीन के नाम से मशहूर होने लगे।

मोदी जी इससे बहुत परेशान हो गए। उन्होंने अमित शाह, आदि जैसे शीर्ष नेताओं की बैठक बुलाई।

अगले दिन भाजपा (तब भी भाजपा थी। कहां थी,यह मोदी जी को भी अब याद नहीं) की रैली में मोदी जी ने नसरुद्दीन को चिढ़ाने और अपनी पापुलरिटी बढ़ाने के लिए 'सर्जिकल स्ट्राइक' करते हुए नसरुद्दीन के आगे मुल्ला शब्द भी जोड़ दिया। यह वाली 'सर्जिकल स्ट्राइक' उनकी बुरी तरह फेल हो गई। मोदी जी के नसरुद्दीन को मुल्ला नसरुद्दीन बनाने से उसकी लोकप्रियता दिनदूनी और रात चौगुनी बढ़ गई। मोदी जी के दिए 'मुल्ला' शब्द को तोहफा मानते हुए खुद उसने अपने नाम के आगे मुल्ला शब्द लगाना शुरू कर दिया और वह मुल्ला नसरुद्दीन हो गया,बल्कि इससे उसकी इज्जत में इतना इजाफा हो गया कि लोग उसका आदर करने लगे और उसे की बजाय उन्हें कहने लगे, मुल्ला नसरुद्दीन कहने लगे।

मुल्ला नसरुद्दीन ने एक हऔर समझदारी दिखाई, बदले की कार्रवाई नहीं की। उसने मोदी जी के आगे पंडित शब्द नहीं जोड़ा।

तब से नरेन्द्र मोदी तो आतेजाते रहते हैं मगर मुल्ला नसरुद्दीन कहीं नहीं जाते। जहां-जहां मोदी जी प्रधानमंत्री या उस जैसे कुछ बनते हैं, वहां-वहां मुल्ला नसरुद्दीन बिना वीसा लिए आकाश मार्ग से पहुंच जाते हैं।

- विष्णु नागर

अंधविश्वास से उपजा भगवान

1977 की बात है। मद्रास हाईकोर्ट में एक याचिका आई जिसमें कहा गया था कि तमिलनाडु में पेरियार की मूर्तियों के नीचे जो बातें लिखी हुई हैं, वे आपत्तिजनक हैं और लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाती हैं इसलिए उन्हें हटाया जाना चाहिए। याचिका को खारिज करते हुए हाईकोर्ट ने कहा कि ईरोड वेंकट रामास्वामी पेरियार जो कहते थे, उस पर विश्वास रखते थे इसलिए उनके शब्दों को उनकी मूर्तियों के पैडेस्टल पर लिखवाना गलत नहीं है।

*पेरियार की मूर्तियों के नीचे लिखा था-
ईश्वर नहीं है और ईश्वर बिलकुल नहीं है।

जिस ने ईश्वर को रचा वह बेवकूफ है, जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है और जो ईश्वर की पूजा करता है वह बर्बर है।

पेरियार नायकर के ईश्वर से सवाल :-

1. क्या तुम कायर हो जो हमेशा छिपे रहते हो, कभी किसी के सामने नहीं आते?
2. क्या तुम खुशामद परस्त हो जो लोगों से दिन रात पूजा, अर्चना करवाते हो?
3.क्या तुम हमेशा भूखे रहते हो जो लोगों से मिठाई, दूध, घी आदि लेते रहते हो?
4. क्या तुम मांसाहारी हो जो लोगों से निर्बल पशुओं की बलि मांगते हो?
5. क्या तुम सोने के व्यापारी हो जो मंदिरों में लाखों टन सोना दबाये बैठे हो?
6. क्या तुम व्यभिचारी हो जो मंदिरों में देव दासियां रखते हो ?
7. क्या तुम कमजोर हो जो हर रोज होने वाले बलात्कारों को नही रोक पाते?
8. क्या तुम मूर्ख हो जो विश्व के देशों में गरीबी-भुखमरी होते हुए भी अरबों रुपयों का अन्न, दूध,घी, तेल बिना खाए ही नदी नालों में बहा देते हो?
9. क्या तुम बहरे हो जो बेवजह मरते हुए आदमी, बलात्कार होती हुयी मासूमों की आवाज नहीं सुन पाते?
10. क्या तुम अंधे हो जो रोज अपराध होते हुए नहीं देख पाते?
11. क्या तुम आतंकवादियों से मिले हुए हो जो रोज धर्म के नाम पर लाखों लोगों को मरवाते रहते हो?
12. क्या तुम आतंकवादी हो जो ये चाहते हो कि लोग तुमसे डरकर रहें?
13. क्या तुम गूंगे हो जो एक शब्द नहीं बोल पाते लेकिन करोड़ों लोग तुमसे लाखों सवाल पूछते हैं?
14. क्या तुम भ्रष्टाचारी हो जो गरीबों को कभी कुछ नहीं देते जबकि गरीब पशुवत काम करके कमाये गये पैसे का कतरा-कतरा तुम्हारे ऊपर न्यौछावर कर देते हैं?
15. क्या तुम मूर्ख हो कि हम जैसे नास्तिकों को पैदा किया जो तुम्हे खरी खोटी सुनाते रहते हैं और तुम्हारे अस्तित्व को ही नकारते हैं।

"नास्तिक" होना आसान नही कोई भी "नासमझ" इंसान "ईश्वर" के अस्तित्व को मानकर फ्री हो जाता है उसके लिए उसे "बुद्धि"की जरुरत नही होती परंतु नास्तिक होने के लिए "दृढ विश्वास और साहस" की जरूरत होती है ऐसी "योग्यता" उन लोगो के पास होती है जिनके पास "प्रखर तर्क बुद्धि" होती है "अंधश्रद्धा" ऐसा "केमिकल" है जो इंसान को "मूर्ख" बनाने मे काम आता है !

- साइबर नजर

व्यंग्य/ भगवा सीताहरण से सत्ताहरण तक

रावण के कहने पर मारीच हिरन का भेष धर कर जंगल में पहुंचा ही था कि एक भगवाधारी साधु नज़र आया। मारीच घबरा गया। सबसे ज़रूरी तो वह माइक छिपाना था जिस पर उसे राम की आवाज़ में लक्ष्मण को पुकारना था। माइक पर लंका न्यूज़ 24X7 चमक रहा था। मारीच झाड़ियों में घुसने लगा।

साधु बोला- क्या चूतियापा है मारीच! मुझसे क्यों छुप रहे हो!!

परिचित स्वर कान में पड़ते ही मारीच की जान में जान आयी। बोला- प्रभु रावण आप! मैं तो भगवा देखकर घबरा गया कि कोई पहुंचा हुआ महात्मा है, कहीं मेरे छल को पहचान न ले। रावण बड़ी ज़ोर से हंसा। बोला-यही है भगवा की ताक़त। सीता हरण से लेकर सत्ताहरण तक में काम आता है। लोग श्रद्धा से भर कर आंख मूंद लेते हैं। देखना जनकनंदिनी सीता भी मुझे भगवा वेश में देखकर श्रद्धा से भर उठेगी। सारा विवेक लुप्त हो जायेगा और मैं आसानी से अपने लक्ष्य में क़ामयाब हो जाऊंगा!

त्रेता हो या कलियुग। हर युग के रावण त्याग और तपस्या के प्रतीक भगवा का यही इस्तेमाल करते हैं। कभी सीताहरण, कभी सत्ताहरण!